'शिक्षण' एक सामाजिक प्रक्रिया है जिस पर प्रत्येक देश की शासन प्रणाली सामाजिक दर्शन तथा मूल्यों एवं संस्कृति का प्रभाव पड़ता रहता है शिक्षण प्रक्रिया पर विभिन्न देशों की शासन प्रणाली तथा दार्शनिक पक्ष का वैसा ही प्रभाव पड़ता है व और तदनुसार ही शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण भी किया जाता है।

शिक्षण उद्देश्य का अर्थ एन.सी.ई.आर.टी (NCERT) द्वारा-
उद्देश्य वह बिन्दु अथवा अभीष्ट है जिसकी दिशा में कार्य किया जाता है अथवा उद्देश्य वह व्यवस्थित परिवर्तन है जिसे क्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता है अथवा जिसके लिए हम क्रिया करते हैं। शिक्षण उद्देश्य के तीन बिन्दु होते हैं—
(i) दिशा (Direction) (ii) व्यवस्थित परिवर्तन (iii) क्रिया

शिक्षण एवं अधिगम के लिए व्यवस्थित योजना के अन्तर्गत पाठ-योजना (LESSON-PLANNING) की चर्चा करने जा रहे हैं। जिसके लिए कई विधियों में हरबर्टीय पञ्चपदी को प्रस्तुत करते हैं।
प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री व मनोवैज्ञानिक हरबर्टीय पञ्चपदी में पाँच पदों द्वारा पाठ के शिक्षण का विधान किया गया है।
(1) प्रस्तावना (2) विषयोपस्थापन (3) तुलना (4) सामान्यीकरण (5) प्रयोग
इन पाँचों पदों मे पाठ-योजना (LESSON-PLANNING) के क्रम एवं गतिविधियों को किस तरह व्यवस्थित व प्रस्तुत करना होता है उसका दिग्दर्शन करें।
(1) प्रस्तावना- यह छात्रों के पूर्वज्ञान से सम्बन्धित होते हैं। इनमें पढ़ाये जाने वाले पाठ को प्रारम्भ करने के लिए कतिपय सरल प्रश्न छात्रों से पूछे जाते हैं जो कि परस्पर सम्बन्धित होते हैं। पढ़ाये गये पूर्व के पाठों से इन प्रश्नों का क्रम जुड़ा रहता है। प्रस्तावना के सफल होने पर ही पाठ की सफलता के अवसर होते हैं। अतः इसे विवेक से बनाना चाहिए
यह अन्तः कथा, उदाहरण, चित्र व प्रश्नों के माध्यम से निकलवाई जा सकती है।

Teacher's Signature Dr. Shyam Bihari Choudhary
Asst. Prof. (Deptt. of Education)
MMHA&PU

Scanned with CamScanner